

Date - 13/02/2025

Time - 10. AM

डॉ मनोज कुमार सिंह

मनोविज्ञान विभाग

महाराजा कॉलेज आरा

P.G - 2nd Semester

Paper - CC - 7

Psychopathology

Topic :-

प्रेक्षण (Observation)

नैदानिक विशेषज्ञों (Clinicians) द्वारा नैदानिक मूल्यांकन में प्रेक्षण प्रविधियों का भी उपयोग सफलतापूर्वक किया है। विक (Weick, 1968) ने प्रेक्षण प्रविधियों को परिभाषित करते हुए कहा है "प्रेक्षण प्रविधि व्यवहारों के चलन, उत्तेजन, अभिलेखन तथा कूटसंकेतन की विधि से होता है।" प्रेक्षण की यह एक काफी विस्तृत परिभाषा है जिसके विश्लेषण से निम्न तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है।

(i) प्रेक्षण में सर्वप्रथम प्रेक्षक यह निर्णय लेता है वह किस तरह से क्लायंट का अध्ययन करेगा; उसके किन-किन तात्कालिक व्यवहारों का अध्ययन करेगा, किस परिस्थितियों में अध्ययन करेगा तथा किस किस समय में अध्ययन करेगा।

(ii) इसके बाद प्रेक्षक इस बात का निर्णय करता है कि क्या अध्ययन करने के लिए कुछ उत्तेजना (*Provocation*) अपनी ओर से दिया जाय या इस घटना विशेष के स्वभाविक रूप से होने का इन्तजार किया जाय।

(iii) इसके बाद प्रेक्षण किये जाने वाले व्यवहारों के अभिलेखन (*Recording*) की योजना बनाता है। इसके लिए वह तरह-तरह के अत्याधुनिक उपकरणों का भी महारा लेता है।

(iv) और, अन्त में मूल प्रेक्षणों (*Raw observations*) को कुछ उपयोगी आयामों (*Useable dimension*) में कूटसंकेतीकरण (*Encoding*) किया जाता है।

नैदानिक मूल्यांकन में जितने भी तरह के प्रेक्षण किए जाते हैं, उन्हें मोटे तौर पर निम्नांकित चार भागों में बाँटा गया है।

1. व्यवहारपरक मूल्यांकन (*Behavioural assesment*)

2. मनोदैहिक मूल्यांकन (*Psychophysiological assesment*)

3. न्यूरोमनोवैज्ञानिक मूल्यांकन (*Neuropsychological assesment*)

4. स्कैनिंग प्रविधि (*Scanning techniques*)

इन सबों का एक-एक कर वर्णन इस प्रकार है।

1. व्यवहारपरक मूल्यांकन (Behavioural Assessment)--व्यवहारपरक मूल्यांकन, प्रेक्षण प्रविधि का एक ऐसा प्रारूप है जिसमें क्लायंट के उस व्यवहार एवं चिंतन का सही-सही ढंग से अभिलेख तैयार किया जाता है। जिसमें परिवर्तन सम्भव है। इस प्रविधि में विशेषतः ऐसे व्यवहार के आपतन (Incidence), अवधि (Duration) तथा तीव्रता (Intensity) पर बल डाला जाता है। दूसरे शब्दों में परिवर्तित किए जाने वाले व्यवहार कब होते हैं (आपतन), वे कितने देर होते हैं (अवधि) और उसकी तीव्रता क्या होती है, के अभिलेखन पर बल डाला जाता है। यह एक ऐसी प्रविधि है जिसका उपयोग स्वयं क्लायंट भी कर सकता है वशर्ते वह किसी गंभीर मानसिक बीमारी का शिकार न हो।

एक तरफ व्यवहारपरक मूल्यांकन का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसका उपयोग काफी सरल है तथा इसके लिए कोई विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है। वहीं दूसरी तरफ इसकी सबसे बड़ी परिसीमा यह है कि इसका उपयोग सभी तरह के मनोवैज्ञानिक समस्याओं के साथ नहीं किया जा सकता है।

2. मनोदैहिक मूल्यांकन (Psychophysiological Assessment) मनोदैहिक मूल्यांकन से तात्पर्य वैसी प्रविधि से होता है जिसमें मनोवैज्ञानिक विकृतियों के दैहिक कारणों या सूचनकांकों एवं उसकी तीव्रता का पता लगाया जाता है। कुछ मनोविकृतियों का उपचार तो इस तरह के मनोदैहिक मूल्यांकन के द्वारा ही उत्तम ढंग से किया जा सकता है। स्पष्टतः तब कहा जा सकता है कि मनोदैहिक मूल्यांकन में मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं का सम्बंध दैहिक अवस्थाओं से जोड़कर सामान्यतः को समझने का प्रयास किया जाता है।

3. न्यूरोमनोवैज्ञानिक मूल्यांकन (Neuropsychological Assessment)- न्यूरोमनोवैज्ञानिक मूल्यांकन, प्रेक्षण का एक ऐसा प्रारूप है जिसमें इस बात का विशेष रूप से मूल्यांकन किया जाता है कि मस्तिष्कीय दृष्टिक्रिया (Brain dysfunction) से किस तरह से मानव व्यवहार एवं चिंतन प्रभावित होकर असामान्य हो जाते हैं। उस तरह न्यूरोमनोवैज्ञानिक, परीक्षण के माध्यम से यह जाना जाता है कि क्लायंट के व्यवहार में जो असमान्ताएँ हैं, उसका कारण मस्तिष्कीय दृष्टिक्रिया है या नहीं। ऐसे परीक्षणों में निम्नांकित प्रमुख हैं।

वर्गीकरण एवं मूल्यांकन

(1) वेन्डर दृष्टि पेशीय गेस्टाल्ट परीक्षण (Bender visual motor Gestalt -Test)

(1) लूरिया नेबरास्का न्यूरोमनोवैज्ञानिक बैटरी (Luria-Nebraska Neuropsychological battery)

(iii) हाल्लास्टीड रिटान न्यूरोमनोवैज्ञानिक बैटरी (Halstead-Reitan Neuropsychological battery) इन सबों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है।

(i) वेन्डर दृष्टि-पेशीय गेस्टाल्ट परीक्षण (Bender visual motor Gestalt test) बेन्डर (Bender. 1938) द्वारा विकसित इस परीक्षण में 9 कार्ड होते हैं जिसमें प्रत्येक कार्ड पर कुछ विशेष तरह का डिजाइन बना होता है। प्रयोज्य को एक-एक कर प्रत्येक डिजाइन को दिखलाया जाता है और उसे अपनी स्मृति से प्रत्येक डिजाइन का नकल करना होता है। क्लायंट द्वारा नकल करने या स्मृति से डिजाइन बनाने में हुयी त्रुटियों को आधार मानकर मस्तिष्कीय क्षति (Brain damage) का अंदाज लगाया जाता है।

(ii) लूरिया नेबरास्का न्यूरोमनोवैज्ञानिक बैटरी (Luria-Nebraska Neuropsychological

Battery)-एलेक्सेण्डर लूरिया जो एक रूसी थे, द्वारा विकसित इस परीक्षण में 269 एकांश हैं जिसके द्वारा क्लायंट के विस्तृत मनोवैज्ञानिक कार्य (Psychological Function) के बारे में अनुमान लगाया जाता है। इसमें क्लायंट के स्पर्श गति कौशलों, शाब्दिक एवं स्थानिक कौशलों, तीक्ष्ण एवं जटिल पेशीय समन्वय, लेखन, पठन, संभाषण एवं अंकगणितीय कौशलों, तना बौद्धिक एवं स्मृति प्रक्रियाओं के बारे में सूचना प्राप्त किया जाता है।

गोल्डेन एवं उनके सहयोगियों (Golden et al., 1980) के अनुसार सम्पूर्ण परीक्षण में क्लायंट द्वारा प्राप्त अंकों के पैटर्न (Pattern) के आधार पर मस्तिष्क के विभिन्न भागों में हुए क्षति का पता लगाया जाता है। बिक्रमैन एवं उनके सहयोगियों (Brickmen et al, 1984) के अनुसार इस परीक्षण द्वारा जैसे मस्तिष्कीय क्षति का भी पता चलता है जो सामान्यतः तंत्रकीय परीक्षा (Neurological examination) से स्पष्ट नहीं हो पाते।

(iii) हालस्टीड-रिटान न्यूरोमनोवैज्ञानिक बैटरी (Halstead-Reitan Neuropsychological battery)-

नैदानिक मूल्यांकन विशेषज्ञ सामान्यतः सिर्फ यही नहीं जानना चाहते हैं कि क्लायंट तंत्रकीय रूप से क्षतिग्रस्त है कि नहीं बल्कि वे यह भी जानना चाहते हैं कि ऐसे क्षति का स्वरूप क्या है और वह कहाँ अवस्थित है।

हालस्टीड-रिटान बैटरी इन उद्देश्यों को भरसक पूरा करता है। इस परीक्षण का उपयोग 15 वर्ष या उससे अधिक आयु के क्लायंट पर किया जाता है। हालांकि इसका दो अन्य रूपांतर (Version) भी विकसित किया गया है जिसमें से एक का उपयोग 14 वर्ष के बच्चों के लिए तथा दूसरे का उपयोग 5 से 8 वर्ष के बच्चों के लिए किया जाता है। इस परीक्षण के वयस्क प्रारूप में करीब 12 उप-परीक्षण होते हैं जिससे सम्पूर्ण MMPI तथा WAIS-R भी शामिल है।

(iv) स्कैनिंग प्रविधि (Scanning technique)- यह प्रेक्षण का सबसे नया प्रविधि है। यहाँ असामान्यता का आकलन मस्तिष्क के विभिन्न अंगों के संरचनात्मक विशेषताओं का प्रतिमा लेकर किया जाता है। इसे मानसिक प्रतिमा (Brain imaging) या स्कैनिंग कहते हैं। इसकी चार प्रविधियाँ सर्वाधिक प्रचलित हैं।

(a) कम्प्यूटाइज्ड एक्सियल टोमोग्राफी (Computerized Axial Tomography or CAT)-एक्स रे तकनीक पर आधारित इस प्रविधि में पूरे मस्तिष्क में एक्स रे का एक घुमता हुआ किरण (beam) भेजा जाता है। इस किरण को खोपड़ी के दूसरे भाग में सोख लिया जाता जो मस्तिष्क से होकर आने वाले रेडियोएक्टिविटी (Radioactivity) की माप करता है। रेडियोएक्टिविटी से उत्पन्न होने वाले अंतर से मस्तिष्कीय उत्तकों के घनत्व (Density) का पता चलता है। इसके बाद इन सूचनाओं को कम्प्यूटरीकरण कर दिया जाता है जो मस्तिष्क के क्रास सेक्सन के द्विआयामीय चित्रण में बोल देता है।

(b) पोजिट्रॉन इमिशन टोमोग्राफी (Positron Emission Tomography & PET)-स्कैनिंग की यह प्रविधि क्लायंट के खून में डाले गये रेडियोआइसोटोपिक (Radioisotopic) तत्वों पर निर्भर करता है। यहाँ मस्तिष्क का घुमता हुआ तस्वीर प्राप्त किया जाता है।

(c) मैग्नेटिक रिसोनेन्स इमेजिंग (Magnetic Resonance imaging)-स्कैनिंग को यह एक नवीनतम प्रविधि है जिसमें क्लायंट को एक बड़े वृत्तीय मैग्नेट के भीतर रखा जाता है जो शरीर के हाइड्रोजन अणु में गति पैदा करता है और जब मशीन को बन्द कर दिया जाता है तो अणु अपने मौलिक स्थान पर आ जाता है और एक एलेक्ट्रोमैग्नेटिक संकेत (Electromagnetic) संकेत उत्पन्न करता है जिसे कम्प्यूटर द्वारा तस्वीर में बदल दिया जाता है।

(d) सुपरकंडक्टिंग क्वान्टम इन्टरफियरेन्स डिवाइस (Superconducting Quantum Interference device or SQUID)-स्कैनिंग की इस विधि में मस्तिष्क के चुम्बकीय क्षेत्र में होने वाले सूक्ष्म परिवर्तनों की पहचान कर मस्तिष्क के विभिन्न भागों की प्रतिमा ली जाती है। इसका उपयोग मस्तिष्क के विभिन्न कार्यों का पता लगाने में सफलतापूर्वक किया गया है।

जीवन रेकॉर्ड (Life-Record)-

नैदानिक मूल्यांकन की प्रविधि के रूप में जीवन रेकॉर्ड का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। इसे व्यक्ति अध्ययन विधि (Case study method) तथा व्यक्ति इतिहास विधि (Case history method) भी कहा जाता है। नैदानिक मूल्यांकन में क्लायंट के जीवन में बीती गत घटनाओं का एक रेकॉर्ड तैयार किया जाता है। इससे इसके स्कूल, कार्य, पुलिस, मेडिकल रिकॉर्ड, चिट्ठियाँ, चित्र, आयकर प्रतिवेदन, पेटिंग, शिल्पकला डायरी आदि प्रमुख हैं जिनके आधार पर गात जीवन का रेकॉर्ड तैयार किया जाता है। पी० वी० युंग (P.V. Young 200) के अनुसार, "व्यक्ति अध्ययन का अर्थ किसी सामाजिक इकाई का विस्तृत अध्ययन है चाहे वह इकाई एक व्यक्ति हो, एक समूह हो, एक सामाजिक संस्था हो, एक जिला हो अथवा एक समुदाय हो" चैपलिन (Chaplin, 1975) ने भी इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि व्यक्ति इतिहास सूचना का एक संकलन है, जिसे किसी अध्ययन के एक वैयक्तिक पात्र से

सम्बंधित पृष्ठभूमि, परीक्षण परिणामों, साक्षात्कारों, कोटियों, निदान आदि पर आधारित उपलब्ध आँकड़े निहित होते हैं।" स्पष्ट हुआ की केस अध्ययन में वर्तमान के साथ ही गत इतिहास से सम्बद्ध घटनाओं से सम्बंधित सूचनाएँ एकत्र की जाती है जिसका उपयोग व्यक्ति की वर्तमान असामान्यता की व्याख्या करने में किया जाता है। केस अध्ययन के सम्बंध में की गयी उपरोक्त व्याख्या से इसकी कुछ विशेषताओं पर प्रकाश पड़ता है जिनमें से कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित हैं।

1. यह शोध की सर्वाधिक प्राचीन प्रविधि है। इसका उपयोग पहले समाजशास्त्र (Sociology) तथा अर्थशास्त्र (Economics) के क्षेत्र में किया जाता था। परन्तु आजकल इसका उपयोग दूसरे सभी सामाजिक तथा व्यवहारपरक विज्ञानों में होने लगा है।

(ii) यहाँ अध्ययन का केन्द्र बिन्दु एक इकाई होता है जो कोई एक व्यक्ति, समूह या समुदाय कुछ भी हो सकता है।

(iii) इस विधि में वांछित आँकड़े प्राप्त करने के लिए कई तरह के सूचनात्मक स्रोतों का सहारा लिया जाता है।

(iv) यहाँ जिस इकाई का अध्ययन किया जाता है उसका दृष्टिकोण विकासात्मक (Developmental) होता है।

नैदानिक मूल्यांकन के उद्देश्य से अपनायी गई इस प्रविधि के कुछ लाभ (Advantage) तथा अलाभ(Disadvantage) भी हैं। इसके कुछ प्रमुख लाभ निम्नांकित हैं।

(i) इस प्रविधि के साथ एक प्रमुख लाभ यह है कि इसमें आर्थिक दृष्टिकोण से मितव्ययीता का गुण पाया जाता है परिणामतः इसका उपयोग नैदानिक मनोवैज्ञानिक द्वारा आसानी से किया जाता है।

(ii) मूल्यांकन की अन्य प्रविधियों के समान क्लायंट को यहाँ कोई नया व्यवहार या अनुक्रिया नहीं करना पड़ता है जिससे मूल्यांकन आँकड़ों को परिस्थितिजन्य कारकों से प्रभावित होने का प्रश्न ही नहीं उठता है।

(iii) इस प्रविधि द्वारा क्लायंट का गहन, विस्तृत तथा समग्र रूप से अध्ययन हो जाता है।

(iv) इसका एक प्रमुख लाभ यह भी है कि इसके द्वारा अपराधी व्यक्ति का अध्ययन करना काफी सार्थक होता है।

उपरोक्त लाभों के अलावा इस मूल्यांकन प्रविधि के साथ कुछ समस्याएँ भी हैं जिनमें से निम्नांकित महत्वपूर्ण हैं।

(i) यहाँ आत्मनिष्ठता की संभावना कदम-कदम पर हावी रहता है। ऐसा देखा गया है कि एक ही इकाई या क्लायंट के जीवन रेकार्ड तथा उसके विश्लेषण करने में व्यक्तिगत भिन्नता होती है।

(ii) इस प्रविधि के साथ एक समस्या यह भी है कि यहाँ क्लायंट द्वारा प्राप्त सूचनाओं की सत्यता की जाँच करना सम्भव नहीं होता। परिणामतः इस प्रविधि की विश्वसनीयता तथा वैधता प्रतिकूल ढंग से प्रभावित होती है।

निष्कर्षतः तब कहा जा सकता है कि नैदानिक मूल्यांकन के लिए कई तरह की प्रविधियाँ उपलब्ध है जिनमें से सुविधा एवं आवश्यकता के अनुकूल मूल्यांकनकर्ता एक या एक से अधिक विधियों का सहारा लेता है